जैन विद्या भाग 3

पाठ क्रमांक 1 (प्रयाण गीत)

1. प्रयाण गीत के कोई दो चरण लिखो?

(1) प्राणों की परवाह नहीं है,प्रण को अटल निभाएंगे।
नहीं अपेक्षा है ओरों की, स्वयं लक्ष्य को पाएंगे।
एक तुम्हारे ही वचनों का, भगवन! प्रतिपल सबल सहारा।।
(2) ज्यों-ज्यों चरण बढ़ेंगे आगे,स्वतः मार्ग बन जायेगा,
हटना होगा उसे बीच में ,जो बाधक बन आयेगा
रुक न सकेगी ,मुड़ ना सकेगी ,सत्य क्रांति की उज्वल धारा।।

2. प्रयाण गीत का पांचवां चरण कौन सा है?

नया मोड़ हो उसी दिशा में ,नई चेतना फिर जागे।
तोड़ गिरायें जीर्ण-शीर्ण जो, अंधरूढियों के धागे।
आगे बढ़ने का यह युग है, बढ़ना हमको सबसे प्यारा।।

3. "आग्रह-हीन गहन चिंतन का"इससे आगे का पद पूरा करो?

आग्रहहीन गहन चिंतन का ,द्वार हमेशा खुला रहे ।
कण-कण में आदर्श तुम्हारा, पय-मिश्री ज्यों घुला रहे।
'जागें स्वयं 'जगायें जग को, हो यह सफल हमारा नारा।।

4. इस गीतिका के रचयिता का नाम बताओ?

आचार्य श्री तुलसी

5. "ज्यो ज्यो चरण बढ़ेंगे आगे" इससे आगे का चरण पूरा करो?

ज्यों ज्यों चरण बढ़ेंगे आगे स्वतः मार्ग बन जायेगा।
हटना होगा उसे बीच में ,जो बाधक बन आयेगा
रुक न सकेगी ,मुड़ न सकेगी ,सत्य क्रांति की उज्जवल धारा।।

पाठ क्रमांक 2 (चउवीसत्थव)

1. उक्कितणं का तीसरा और पांचवां श्लोक लिखें।

सुविहिं च पुप्फदंतं,सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं,धम्मं संतिं च वन्दामि।।
एवं मए अभिथुआ,विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा,तित्थयरा में पसीयंतु।।

2. बोहिदयाणं से आगे की पाटी को पूर्ण करें।

बोहिदयाणं
जीवदयाणं
धम्मदयाणं
धम्मदेसयाणं
धम्मनायगाणं
धम्मसारहीणं
धम्मवर-चाउरंत
चक्कवट्टीणं दीवो ताणं
सरण-गई -पइट्ठा
अप्पडिहयवर
नाण-दंसण-धराणं
विअट्टछउमाणं
जिणाणं
जावयाणं
तिन्नाणं
तारयाणं
बुद्धाणं
बोहयाणं
मुत्ताणं
मोयगाणं
सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं
सिवमयल
मरुयमणंत
मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तयं
सिद्धिगइनामधेयं
ठाणं संपत्ताणं
णमो जिणाणं
जियभयाणं

3. चउवीसत्थव की पहली पाटी लिखें।

इच्छामि पडिक्कमिउं
इरियावहियाए विराहणाए
गमणागमणे पाणक्कमणे
बीयक्कमणे हरियक्कमणे
ओसा-उत्तिंग-पणग
दगमट्टी-मक्कड़ा-संताणा
संकमणे।
जे मे जीवा
विराहिया
एगिंदिया बेइंदिया
तेइंदिया चउरिंदिया
पंचिंदिया
अभिहया
वत्तिया
लेसिया
संघाइया
संघट्टिया
परियाविया
किलामिया
उद्दविया
ठाणाओ ठाणं संकामिया
जीवियाओ ववरोविया
जो मे देवसिओ अइयारो कओ
तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

4. 'छीएणं जंभाइएणं' इससे आगे की पाटी पूरी लिखो।

छीएणं जंभाइएणं
उड्डुएणं वायनिसग्गेणं
भमलीए
पित्तमुच्छाए
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं
सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
एवमाइएहिं आगारेहिं
अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गो
जाव अरहंताणं

भगवंताणं
नमोक्कारेणं न पारेमि
ताव कायं
ठाणेणं मोणेणं
झाणेणं
अप्पाणं वोसिरामि।

5. कुंथुं अरं च मल्लिं' यह कौनसा श्लोक है?

यह उक्कित्तणं पाटी का चौथा श्लोक है।

पाठ क्रमांक 3 (विजय गीत)

1. विजय गीत के रचनाकार कौन हैं?

आचार्य श्री तुलसी

2. तेज सूरज सा... पद्य को पूरा करें।

तेज सूरज-सा लिए हम
शुभ्रता शशि-सी लिए हम।
पवन -सा गतिवेग लेकर, चरण ये आगे बढ़ाएं।।

3. विजय गीत के कोई दो पद्य लिखेँ।

हम न रुकना जानते हैं,
हम न झुकना जानते हैं।
हो प्रबल संकल्प इतना, सफ़ल हों सब कल्पनाएं।।
हम अभय निर्मल निरामय,
हैं अटल जैसे हिमालय।
हर कठिन जीवन-घड़ी में, फूल बनकर मुस्कुराएं।।

पाठ क्रमांक 4 (महावीर वाणी (सूक्त))

1. सत्य पद के दो सूक्त लिखो।

सच्चं लोयम्मि सारभूयं।
सच्चं खु भयवं।

2. शिक्षा पद के तीन सूक्त लिखो।

काले कालं समायरे।
राइणिएसु विणयं पउंजे।
विवेगे धम्ममाहिए।

3. अहिंसा पद के तीन सूक्त लिखो।

अप्पा मित्तममित्तं च।
मेत्तिं भूएसु कप्पए।
अहिंसा सव्वभूय खेमंकरी।

4. 'अत्तसमे मन्निज्ज छप्पिकाए'इसका क्या अर्थ है?

छः ही काय के जीवों को अपनी आत्मा के समान समझो।

पाठ क्रमांक 5 (तीर्थंकर मल्लिकुमारी)

1. किस किस देश के राजाओं ने मल्लि कुमारी से विवाह की कामना की थी?

अंग ,बंग ,काशी, कौशल, कुरु और पांचाल के पड़ोसी राजाओं ने मल्लिकुमारी से विवाह की कामना की थी।

2. मल्लि कुमारी ने राजाओं को किस युक्ति से समझाया ?

मल्लिकुमारी ने राजाओं को समझाने के लिए एक युक्ति निकाली। सर्वप्रथम ठीक अपने ही आकार की एक धातु की प्रतिमा का निर्माण करवाया जो भीतर से पोली थी ।अपने प्रति दिन के भोजन का कुछ अंश मल्लि कुमारी उस प्रतिमा में डाल देती थी वह प्रतिमा विशेष रुप से बनाए गए गोलाकार कक्ष के मध्य में स्थापित की गई थी ।जब राजकुमारों ने मल्लि कुमारी के रूप सौंदर्य को देखा तो उनको लगा मानो स्वर्ग से देवी उतर कर आई हो। लेकिन जब मल्लिकुमारी ने प्रतिमा का ढक्कन खोल दिया तब उसमें से सड़े अनाज की दुर्गंध आने लगी। जिससे सब राजकुमारों ने अपनी नाक बंद कर ली। राजकुमारी ने राजकुमारों को समझाया कि वसुधाधिपों! आप मल्ली के जिस रूप सौंदर्य पर बिक चुके हैं उसका शरीर भी तो खाद्य सामग्री से ही पोषित हुआ है यह शरीर अशुची का भंडार है ,नश्वर है ।यौवन और रूप भी नश्वर है ।इस तरह उसने राजाओं को अपनी युक्ति से शरीर की नश्वरता को समझाया और सभी नरेशों ने मल्लिकुमारी के पथ का अनुशरण करते हुए संयम मार्ग को स्वीकार किया।

3. मल्लि कुमारी ने संयम स्वीकार किया उस समय उसकी अवस्था क्या थी?

100 वर्ष

4. मल्लिकुमारी की कहानी संक्षिप्त में लिखें?

तीर्थंकर जैसे सर्वोच्च पद को अलंकृत करने वाली मल्लिकुमारी की माता का नाम प्रभावती तथा पिता का नाम कुंभ था ।रूपवती होने के कारण अंग, बंग, काशी, कौशल, कुरु और पांचाल के नरेश राजकुमारी मल्ली पर मुग्ध थे। मल्लिकुमारी को वे बल प्रयोग से अपनाना चाहते थे लेकिन मल्लिकुमारी बुद्धि संपन्न भी थी ।उन्होंने अपने पिता की चिंता मिटाने के लिए एक युक्ति निकाली ।मल्लि कुमारी ने 6 महीने का समय मांगा छहों नरेश से मिलने के लिए। उन्होंने अपने जैसी ही पोली धातु की प्रतिमा बनवाई और प्रतिदिन भोजन का कुछ अंश उस में डालती गई। छह महीने पश्चात सभी नरेशों को आमंत्रित किया और इस तरह बिठाया कि वे आपस में एक दूसरे को देख ना सके फिर उस कक्ष में प्रवेश किया और प्रतिमा का ढक्कन खोला तो पूरा कक्ष दुर्गंध से भर गया तब मल्लिकुमारी ने उन राजकुमारों को समझाते हुए कहा जो गंध इस प्रतिमा से आ रही है वही गंध इस शरीर से भी फूटने वाली है ।आप छहों नरेश हमारे पूर्व जन्म के मित्र हैं। किंतु मैंने संकल्प नहीं निभाया इसी कारण मैं स्त्री रूप में और आप पुरुष रूप में पैदा हुए हैं ।आप सभी मेरे साथ संयम जीवन को स्वीकार कर आत्मा का कल्याण करें। इस प्रकार छहों राजा व मल्लिकुमारी ने एक साथ दीक्षा स्वीकार की ।मल्लि कुमारी ने अंतर्मुहूर्त की साधना में ही केवल ज्ञान प्राप्त कर तीर्थंकर जैसे सर्वोच्च स्थान को प्राप्त किया।

पाठ क्रमांक 6 (भगवान् अरिष्टनेमि)

1. भगवान् अरिष्टनेमि कौन से तीर्थंकर हुए उनका यह नाम क्यों पड़ा?

भगवान् अरिष्टनेमि 22 वें तीर्थंकर हुए। बालक के गर्भकाल में रहते समय महाराज समुद्रविजय आदि सब प्रकार के अरिष्टों से बचे तथा स्वप्न में रिष्ट रत्नमय नेमि देखे जाने के कारण पुत्र का नाम अरिष्टनेमि रखा गया।

2. कृष्ण और अरिष्टनेमि का क्या संबंध था?

कृष्ण और अरिष्टनेमि का पारिवारिक संबंध था अरिष्टनेमि समुद्र विजय के पुत्र थे और श्री कृष्ण वसुदेव के पुत्र थे। समुद्र विजय और वसुदेव सगे भाई थे।अर्थात् श्री कृष्ण और अरिष्टनेमि चचेरे भाई थे।

3. विवाह के लिए गए हुए अरिष्टनेमि वापस क्यों लौट आए?

जब अरिष्टनेमि विवाह के लिए जा रहे थे तो उन्हें करुण शब्द सुनाई दिए।तब उन्होंने सारथी से पूछा यह शब्द "कहां से आ रहे हैं"? सारथी ने कहा "देव! यह शब्द पशुओं की चीत्कार के हैं ।जो आप के विवाह में सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों के लिए भोज्य बनेंगे अतःउनका वध होगा ।मरण भय से वे क्रंदन कर रहे हैं। अरिष्टनेमि का मन खिन्न हो गया उन्होंने कहा "यह कैसा आनंद !यह कैसा विवाह !जहां हजारों पशुओं का वध किया जाता है यह तो संसार में परिभ्रमण का हेतु है" इस कारण अरिष्टनेमि ने वहां से अपने रथ को निवास स्थान की ओर मोड़ लिया।

4. अरिष्टनेमि के पिता का नाम क्या था?

अरिष्टनेमि के पिता का नाम समुद्रविजय था।

पाठ क्रमांक 7 (गणधर परंपरा)

1. किन्हीँ चार गणधरों पर विस्तार से लिखें।

भगवान महावीर के 11 गणधर थे ।इंद्रभूति, अग्निभूति ,वायुभूति, व्यक्त, सुधर्मा ,मंडित ,मौर्य पुत्र ,अकम्पित, अचलभ्राता ,मेतार्य और प्रभास।

गणधर इंद्रभूति गौतम:-

पिता वसुभूति और माता पृथ्वी के पुत्र इंद्रभूति अपने गोत्र 'गौतम' के नाम से प्रसिद्ध थे ।'गोबर' ग्राम के बहुप्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल के इंद्रभूति 4 वेद ,14 विद्याओं में निष्णात तथा प्रसिद्ध याज्ञिक थे ।सोमिल ब्राह्मण के निमंत्रण पर मध्यमपावा में यज्ञार्थ गए। वहां भगवान् महावीर के संपर्क में आते ही जीव के अस्तित्व के बारे में संदेह मिट गया और 50 वर्ष की अवस्था में 500 ब्राह्मण शिष्यों के साथ दीक्षा ली भगवान के प्रथम शिष्य और प्रथम गणधर थे। गौतम के मन में उठने वाली सभी शंकाओं का समाधान भगवान् महावीर देते और वही उपदेश शाश्वत सत्य की गाथा बन गया। भगवान् का निर्वाण होने के बाद उन्हें केवल ज्ञान हुआ ।भगवान से उम्र में 8 वर्ष बड़े होने के बावजूद भी उनके प्रति समर्पणभाव, जिज्ञासा और विनयभाव था।

अग्निभूति ब्राह्मण:-

अग्निभूति गणधर गौतम के मझले भाई थे। वेद, उपनिषद् और कर्मकांड के ज्ञाता और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी अग्निभूति को जब इंद्रभूति के दीक्षा के समाचार मिले तो भगवान से शास्त्रार्थ करने वहां गए ।किंतु भगवान की मुखमुद्रा देखते ही उनकी समस्त शंकाओं का समाधान हो गया ।द्वैत- अद्वैत संबंधी शंकाओं का निराकरण स्वयं ही हो गया और 46 वर्ष की अवस्था में दीक्षा ग्रहण की।

अचल भ्राता:-

अचल भ्राता की माता का नाम नंदा और पिता का नाम वासु था ।ये कौशल निवासी हारीतगोत्रीय ब्राह्मण थे। क्रियाकांड, यज्ञ-विज्ञान आदि के ज्ञाता थे ।300 छात्र इनके शिष्य थे ।मन में पुण्य- पाप के अस्तित्व एवं उसके फलाफल के संबंध में आशंका थी। भगवान महावीर का सान्निध्य पाकर जीवन की धारा बदली और 47 वर्ष की आयु में दीक्षा ली। 72 वर्ष की आयु में मोक्ष गमन किया।

मेतार्य:-

मेतार्य की माता का नाम वरुणा देवी और पिता का नाम दत्त था ।ये वत्स देश में तुंगिक नगर के कौंडिल्य गोत्र के ब्राह्मण थे ।300 शिष्यों के अध्यापक थे। मन में "परलोक है या नहीं" पर संदेह था ।भगवान महावीर के पास अपनी शंका को मिटाकर 300 शिष्य सहित संयमी बने। 62 वर्ष की आयु में इन्होंने निर्वाण प्राप्त किया। भगवान् महावीर के दसवें गणधर कहलाए।

2. गणधर प्रभास की माता का क्या नाम था?

गणधर प्रभास की माता का नाम अति भद्रा था।

3. इंद्रभूति गौतम ने कितने शिष्यों के साथ दीक्षा ली?

इंद्रभूति गौतम ने 500 ब्राह्मण शिष्यों के साथ दीक्षा ली।

4. सभी गणधरों ने अपने कितने - कितने शिष्यों के साथ भगवान के पास दीक्षा ली ?

गणधर गौतम- 500 शिष्य

अग्निभूति- 500

वायु भूति- 500

व्यक्त- 500

सुधर्मा- 500

मण्डितपुत्र- 350

मौर्यपुत्र- 350

अकम्पित- 300

अचलभ्राता- 300

मेतार्य- 300

प्रभास- 300 शिष्यों के साथ भगवान के समवसरण में दीक्षा ली।

5. सभी गणधरों की क्या शंका थी , जिनका समाधान भगवान महावीर से उन्होंने प्राप्त किया ?

   1. इंद्र भूति- जीव हैं या नहीं?
   2. अग्निभूति- कर्म हैं या नहीं?
   3. वायुभूति- शरीर और जीव एक हैं या भिन्न?
   4. व्यक्त- पृथ्वी आदि भूत हैं या नहीं?
   5. सुधर्मा-यहां जो जैसा हैं वह परलोक में भी वैसा हैं या नहीं?
   6. मंडित- बंध, मोक्ष हैं या नहीं?
   7. मौर्यपुत्र- देव हैं या नहीं?
   8. अकम्पित-नर्क हैं या नहीं?
   9. अचलभ्राता- पुण्य की मात्रा सुख-दुःख का कारण बनती हैं या पाप पृथक हैं?
   10. मेतार्य- आत्मा होने पर भी परलोक हैं या नहीं?
   11. प्रभास- मोक्ष हैं या नहीं?

6. सभी गणधर कौनसे स्थान से थे?

प्रथम तीन गणधर-गोबर ग्राम वासी
व्यक्त, सुधर्मा -कोल्लाग सनिवेश ।
मण्डित,मौर्यपुत्र-मौर्यग्राम वासी।
अकम्पित- मिथिला वासी थे।
अचलभ्राता- कौशल निवासी थे।
मेतार्य- तुंगिक नगरी के थे।
प्रभास- राजगृह के थे।

पाठ क्रमांक 8 (अंतिम केवली आचार्य जम्बू)

1. जम्बू को वैराग्य कैसे हुआ?

गणधर सुधर्मा स्वामी के अमृतमयी वचनों को सुनकर जम्बूकुमार को वैराग्य उत्पन्न हुआ।

2. माता पिता ने जम्बू से क्या कहा?

माता पिता ने जम्बू कुमार को अपार संपत्ति और सुखों का प्रलोभन दिया साथ ही साधु चर्या की कठोरता का चित्र भी उपस्थित किया।

3. चोर धन की गठरियों को क्यों नहीं उठा पा रहे थे?

जम्बुकुमार का अपनी नवविवाहित पत्नियों के साथ वैराग्य भरी चर्चा को सुनकर चोरों के पैर भूमि पर चिपक गए थे।जिसके कारण वे हिल भी नहीं पा रहे थे। इसलिए वे गठरियों को नहीं उठा पाए।

4. प्रभव के दिल बदलने का क्या कारण था?

विवाह की प्रथम रात्रि में ही जम्बू कुमार का अपनी पत्नियों के साथ वैराग्य भरी चर्चा को सुनकर प्रभव का दिल बदल गया।

5. अवस्वापिनी विद्या से प्रभव क्या करता था?

अवस्वापिनी विद्या से प्रभव चोर सबको निद्रा दिला सकता था।

पाठ क्रमांक 9 (आचार्य हरिभद्र सूरि)

1. आचार्य हरिभद्र ने दीक्षा किस के पास ली?

आचार्य हरिभद्र ने दीक्षा विद्याधर गच्छ के आचार्य जिनदत्त सूरि के पास ली।

2. उन्होंने बौद्ध शिष्यों की हिंसा का उपक्रम क्यों सोचा?

दो प्रिय शिष्य हंस और परमहंस की मृत्यु से हरिभद्र को गहरा आघात लगा।तब उन्होंने कोपाविष्ट होकर तंत्र बल से 1444 बौद्ध शिष्यों को बुलाकर तेल के कड़ाह में तलने का महान हिंसा का उपक्रम सोचा।

3. हरिभद्र ने कितने ग्रंथों की रचना का संकल्प किया था?

1444 ग्रंथ

4. हरिभद्र ने प्रतिबोध किससे प्राप्त किया था?

याकिनी महत्तराजी से प्रतिबोध प्राप्त किया।(साध्वी संघ की प्रवर्तिनी उस समय)

5. हरिभद्र के कई प्रमुख ग्रंथों के नाम लिखे?

हरिभद्र के प्रमुख ग्रंथ इस प्रकार है- समराइच्चकहा ,अनेकांत जयपताका, अनेक आगमों की टीकाएं, योगबिंदु, योग दृष्टि -समुच्चय ,षड्दर्शन समुच्चय, योग शतक और शास्त्र वार्ता समुच्चय।

6. हरिभद्र कितनी विद्याओं में निष्णात थे?

हरिभद्र 14 प्रकार की विद्याओं में निष्णात थे।

7. आचार्य हरिभद्र का बोध किसके कारण पिघला?

साध्वी याकिनी महत्तरा जी के कारण।

पाठ क्रमांक 10 (आचार्य श्री मघवागणी)

1. मघवागणी ने अपने हाथ से कितनी दीक्षाएं दी?

   मघवागणी ने 22 साधु और 45 साध्वियो को अपने हाथ से दीक्षा प्रदान की।

2. मघवागणी के माता-पिता का क्या नाम था?

   मघवा गणी के पिता का नाम पूरणमल जी बेगवानी तथा माता का नाम बन्नाजी था।

3. मघवा गणी को आचार्य पद कहां दिया गया और उस समय उनकी अवस्था कितनी थी?

   मघवा गणी को आचार्य पद जयपुर में दिया गया और उस समय उनकी अवस्था 41 वर्ष की थी।

4. आचार्य श्री मघराज जी के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डालो।

   मघवागणी तेरापंथ धर्म संघ के पांचवें आचार्य थे।

   जन्म व परिवार-

   मघराज जी का जन्म विक्रम संवत 1897 चैत्र शुक्ला एकादशी को बीदासर के बेगवानी परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम पूरणमल जी व उनके माता का नाम बन्ना जी था।

   वैराग्य व दीक्षा

   विक्रम संवत 1908 में युवाचार्य जीतमल जी का चातुर्मास बीदासर में था उसी चातुर्मास में बन्ना जी तथा बालक मघराज के मन में संयम की भावना उत्पन्न हुई। उनके दीक्षा में अनेक बाधाएं उत्पन्न हुई लेकिन आखिरकार उनके मजबूत मनोबल के कारण संवत् 1908 मृगसिर कृष्णा द्वादशी को उनकी दीक्षा हुई।

   विशेषताएं

   मघवागणी तेरापंथ धर्मसंघ में संस्कृत के प्रथम पंडित कहे जाते थे लिपि कौशल भी उनकी बहुत सुंदर थी उनकी बुद्धि इतनी स्थिर थी,वे एक बार कंठस्थ किए हुए ग्रन्थ को प्रायः भुला नहीं करते थे।तेरापंथ धर्म संघ में सबसे अधिक कोमल प्रकृति के आचार्य थे।

   विभिन्न पद

   जयाचार्य ने मात्र 14 वर्ष की उम्र में मघराज जी को श्री पंच बना दिया और 24 वर्ष की अवस्था में युवाचार्य पद पर आसीन किया गया। विक्रम संवत 1938 भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को जयपुर में तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य बने ।

   दीक्षाएं:

   शासन काल में 119 दीक्षाये हुई।स्वयं ने भी 67 दीक्षा प्रदान की।

स्वर्गवास

मघवागणी का स्वर्गवास विक्रम संवत 1949 चैत्र कृष्णा पंचमी को सरदार शहर में हुआ।

पाठ क्रमांक 11 (आचार्य श्री माणकगणी)

1. माणकगणी की दीक्षा कहां हुई?

   माणकगणी की दीक्षा लाडनूं में विक्रम संवत् 1928 फाल्गुन शुक्ला एकादशी के दिन हुई।

2. माणकगणी का शासन काल कितने वर्षों तक रहा?

   माणकगणी का शासनकाल 4 वर्ष 7 माह का रहा।

3. माणकगणी का स्वर्गवास किस महीने में हुआ?

   माणकगणी का स्वर्गवास वि.सं.1954 कार्तिक कृष्णा 3 को सुजानगढ़ में हुआ।

4. माणकगणी के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डालो?

   तेरापंथ के छठे आचार्य में माणकगणी का नाम लिया जाता है।

   जन्म व परिवार:-

   माणकगणी का जन्म विक्रम संवत् 1912 भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी को जयपुर में लाला हुकुमचंद जी और माता छोटां जी के प्रांगण में हुआ। वे श्रीमाल जाति और ख़ारेड गौत्र के थे ।जब माणकचन्दजी 2 वर्ष के थे तब उनके पिता की हत्या सांगानेर के पास डाकुओं द्वारा कर दी गई।

   वैराग्य भाव:-

   वि.सं.1928 का चातुर्मास जयाचार्य ने जयपुर में किया। तब माणकलालजी के मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न हुई लेकिन उन्हें दीक्षा की आज्ञा नहीं दी गयी।जयाचार्य जब विहार कर कुचामन पधारे तब चाचा लाला लक्ष्मणदास जी रास्ते की सेवा में थे।जयाचार्य ने लालाजी से कहा -'यदि माणक दीक्षा ले तो तुम बाधक तो नहीं बनोगे'।तब लालाजी ने तत्काल आज्ञा दे दी।

   दीक्षा:-

   माणकलालजी की दीक्षा लाडनूं में वि.सं.1928 फाल्गुन शुक्ला एकादशी के दिन साढ़े सोलह वर्ष की उम्र में हुई।माणकगणी प्रकृति से नम्र थे व उनकी बुद्धि तीक्ष्ण थी।दीक्षा के 3 वर्ष बाद ही उन्हें अग्रणी बना दिया।

   युवाचार्य काल:-

वि.सं 1949 चैत्र कृष्णा द्वितीया को सरदारशहर में मघवागणी ने विधिवत् अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर लिया।युवाचार्य अवस्था में वे 4 दिन रहे,पांचवें दिन मघवागणि का स्वर्गवास हो गया।

आचार्य काल:-

वि.सं.1949,चैत्र कृष्णा अष्टमी को सरदारशहर में आचार्य पद पर आसीन हुए।तेरापंथ के आचार्यों में सर्वप्रथम हरियाणा पधारने वाले आचार्यों में माणकगणी का ही नाम लिया जाता है। इन्होंने अपने जीवनकाल में 15 साधु और 25 साध्वियों को दीक्षा दी।

अंतिम समय:-

वि.सं.1954 का चातुर्मास सुजानगढ़ में था।उन्हें ज्वर(बुखार)हो गया।तब मंत्री मुनि ने प्रार्थना की कि आगे की व्यवस्था के लिए किसी को नियुक्त कर दें लेकिन माणकगणी को विश्वास नहीं था कि वे इतनी जल्दी चले जायेंगे।इसलिए वे आचार्य की नियुक्ति नहीं कर पाए। वि.सं.1954कार्तिक कृष्णा 3 को सुजानगढ़ में 42 वर्ष की अवस्था में माणकगणी का स्वर्गवास हो गया।माणकगणी का शासनकाल 4 वर्ष 7 मास का रहा।

पाठ क्रमांक 12 (आचार्य डालचन्दजी)

1. डालगणी की दीक्षा कहां हुई थी?

डालगणी की दीक्षा इंदौर में हुई थी।

2. डालगणी के आचार्य चुनाव की घटना के बारे में संक्षिप्त प्रकाश डालो?

तेरापंथ शासन में यह व्यवस्था है की पूर्ववर्ती आचार्य ही आगामी आचार्य की घोषणा करते हैं ।लेकिन छठे आचार्य श्री माणकगणी का स्वर्गवास अचानक हो गया और वे किसी को आचार्य नियुक्त नहीं कर पाए ।उस समय मंत्री मुनि मगन लाल जी व संघ के बुजुर्ग संत कालू जी ने बड़ी सूझबूझ का परिचय दिया तथा सभी साधुओं से विचार विमर्श कर उसी के आधार पर सभी साधुओं की सभा बुलाने तथा भावी आचार्य की घोषणा या चुनाव की चर्चा की बात हुई ।आखिर सभी साधुओं ने मुनि कालूजी पर ही भार छोड़ दिया कि वे किसी साधु का नाम आचार्य के लिए घोषित कर दे ,वही सब को मान्य होगा। विक्रम संवत्1954 पौष कृष्णा 3 को मुनि कालूजी ने संघ व पूर्ववर्ती आचार्यों का गुणगान करते हुए कहा-हमारा शासन भगवान् महावीर का शासन है।उसका संचालन करने के लिए आज हमें एक आचार्य की आवश्यकता है इसलिए मैं आप सबकी अनुमति का उपयोग करते हुए अपने संघ के लिए सप्तम आचार्य के लिए मुनि डालगणी का नाम घोषित

करता हूं ।जो इस समय यहां उपस्थित नहीं है फिर भी हमारे आचार्य हो चुके हैं ।वे कच्छ से विहार करके इधर आ रहे हैं।

3. डालगणी के आचार्य काल का एक संस्मरण बताओ?

एक बार मेवाड़ क्षेत्र में विहर करके थली की और पधारते हुए डालगणी ब्यावर में पधारे।अन्य संप्रदाय के कुछ व्यक्तियो की बातचीत के बीच में ही एक व्यक्ति खङा होकर बोल उठा "तुम लोगों से क्या बात की जाए तुम तो अभी अभी मार्ग में 10 मण का हलुआ बनवाकर ले लिया।डालगणी ने आश्चर्यान्वित होकर पूछा "क्या कहा 10 मन का हलवा ?वह आटे का या मैदे का? उसने कहा -आटे का।डालगणी ने वहां उपस्थित लोगों से पूछा "क्यों भाई 10 मण आटे में चीनी ,घी और पानी डालने पर कितना हलवा बनता है? उनमें से एक ने कहा "एक मण आटे का 8 मण हलुवा होता है ।डालगणी ने कहा तब तो 10 मण आटे का 80 मण हलुआ हुआ। अब जरा सोचो 80 मण हलुआ हम लाए कैसे होंगे और खाया कैसे होगा?उस व्यक्ति ने संभलते हुए कहा -मैंने तो जैसा सुना है वैसा कहा है,लिया नहीं लिया वो तुम जानो।ङालगणी ने फरमाया "इतनी बुद्धि तो एक गवार में भी मिल सकती है। मुंह से बात निकालने से पहले उसकी सत्यता और सत्यता को तोल लें।इस प्रकार उनका जीवन घटना प्रधान था।

4. डालगणी की माता का नाम क्या था?

डालगणी की माता का नाम जड़ावांजी था।

पाठ क्रमांक 13 (महासती सरदारांजी)

1. तेरापंथ की वर्तमान साध्वी प्रमुखा का नाम बताओ?

तेरापंथ की वर्तमान साध्वी प्रमुखा महाश्रमणी कनकप्रभा जी है।

2. महासती सरदारांजी का जब विवाह हुआ उस समय उनकी उम्र कितनी थी?

महासती सरदारां जी का जब विवाह हुआ उस समय उनकी उम्र 10 वर्ष की थी।

3. महासती सरदारां जी की कठिन परीक्षा का वर्णन करो?

सरदारांजी के पति का देहावसान हो जाने के बाद उनमें वैराग्य भावना बढ़ी।लेकिन विधिवत् साध्वी बनना आज्ञा के बिना असंभव था। उनके जेठ बहादुर सिंह आज्ञा नहीं दे रहे थे इसलिए उन्होंने प्रतिज्ञा की "जब तक आप मुझे दीक्षा की आज्ञा नहीं देते तब तक मैं आपके घर से अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगी।" जेठ ने घर से बाहर जाने के लिए रोक लगा दी ।6 दिन तक सरदारांजी ने कुछ नहीं खाया।तब जेठ ने कहा "दासी से भिक्षा मंगवाकर काम चलाओ इससे तुम्हारी प्रतिज्ञा भी भंग

नहीं होगी" कुछ दिनों तक यह क्रम चला फिर एक दिन स्वयं दीक्षा के लिए बाहर चले गए। दूसरे दिन इस पर भी रोक लगा दी।सरदारांजी को एक कमरे में बंद कर दिया ।भावनाओं का वेग बढा और सफेद वस्त्र धारण कर लिए। हाथों से ही केस लुचंन करने लगी। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि "जब तक आज्ञा पत्र नहीं मिलेगा तब तक मैं अन्न जलग्रहण नहीं करूंगी"इस प्रकार दीक्षा की आज्ञा के लिए अनेक कठिन परीक्षा दी।

4. साध्वी सरदारां जी ने जयाचार्य से किस सुधार के लिए प्रार्थना की थी?

सरदारांजी के समय साधु साध्वियों की समस्त भिक्षा आचार्य के समक्ष एकत्र की जाती थी और उसमें साधु जितना चाहते उतना रख लेते शेष साध्वियों को दे देते ।सरदारांजी को यह बात अखरी ।तब उन्होंने श्री मज्जाचार्य से उचित परिवर्तन की प्रार्थना की तभी से आहार के संविभाग की परंपरा का श्रेय सरदार सती को ही जाता है।

5. 8 साध्वी प्रमुखाओं के नाम लिखो।

1.साध्वी प्रमुखा सरदारांजी

2.साध्वी प्रमुखा गुलाबांजी

3.साध्वी प्रमुखा नवलांजी

4.साध्वी प्रमुखा जेठां जी

5.साध्वी प्रमुखा कानकंवर जी

6.साध्वी प्रमुखा झमकू जी

7.साध्वी प्रमुखा लाडांजी

8.साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी

6. महासती सरदारांजी द्वारा संविभाग की व्यवस्था के बारे में लिखेँ।

आहार के सम विभाग की परंपरा का श्रेय भी सरदारां जी को ही है उस समय साधु साध्वियों की समस्त भिक्षा आचार्य के समक्ष एकत्र की जाती और उसमें से साधु जितना चाहे उतना रख लेते शेष साध्वियों को दे देते सरदारा जी को यह बात अखरी उन्होंने श्रीमज्जयाचार्य से उचित परिवर्तन की प्रार्थना की उनके अनुसार संविभाग की व्यवस्था चालू हो गई।

8. कुशल व्यवस्थापिका कौन सी साध्वी थी उनकी कुशलता पर प्रकाश डालें?

कुशल व्यवस्थापिका महासती सरदारांजी थी।

कुशल व्यवस्थापिका:-

आचार्यों का आपके काम के प्रति संदिग्ध भाव था साध्वी समाज की एक और समस्या थी साध्वियो के संगठक सम संख्यात्मक नहीं थे किसी संगठन में एक साध्वी रहती तो किसी संगठन में केवल तीन ही।लाडनूं में 1 दिन श्रीमज्जयाचार्य ने

सरदारांजी से कहा साध्वियो की योग्यता अनुसार उनके संघाटक तैयार करो और उनकी संख्यात्मक विषमता मिटा दो आपने आदेश पा एक रात में 121 साध्वियों के 23 नए संघाठक तैयार कर जयाचार्य को निवेदित किया सरदारांजी के व्यक्तित्व के कारण ही सब कुछ आसानी से हो गया

9. सरदारांजी के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डालो?

तेरापंथ धर्म शासन एक आचार्य एक आचार एक विचार और एक संगठन के लिए प्रसिद्ध है शासन का समस्त कार्यभार आचार्य के कंधों पर रहता है वह संघ के सर्वांगीण वाहक होते हैं परंतु साध्वियों से इतना निकट संपर्क नहीं रहता आचार्य अपनी इच्छा अनुकूल साध्वी समाज में से एक योग्य साध्वी को साध्वी समाज की प्रमुखा के रूप में स्थापित करते हैं।

जन्म और विवाह:-

महासती सरदारांजी का जन्म विक्रम संवत 1864 में राजस्थान के प्रसिद्ध चूरू शहर के कोठारी परिवार में हुआ उनके पिता का नाम जैत रूप जी व माता का नाम चंदना था 10 वर्ष की बाल्यावस्था में ही आपका विवाह सुल्तान मलजी ढड्ढा के सुपुत्र जोरावर मल जी के साथ जोधपुर के फलोदी ग्राम में हुआ विवाह के कुछ समय बाद सरदारांजी के पति चल बसे परंतु पति का वियोग सरदारांजी के भावी जीवन का शुभ संयोग बन गया।

प्रथम संपर्क और तपस्या

विक्रम संवत 1883 में तेरापंथ के तृतीय आचार्य श्रीमद् रायचंद जी का चूरू में पदार्पण हुआ आप उनके संपर्क में आए प्रतिदिन व्याख्यान सुनती और पोषध भी करती 1887 में मुनि जीतमल जी ने अपना चातुर्मास चूरू में किया सरदारांजी ने चातुर्मास मे अपनी जिज्ञासाओं का समुचित समाधान पाया और तेरा पंथ की श्रद्धा स्वीकार कि आपने 13-14 वर्ष की आयु में यावज्जीवन चौविहार और प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करने का व्रत ले रखा था आप ने तपस्या प्रारंभ कर दी और कई महीनों तक एकांतर तप किया 10 दिन का चौविहार करने का संकल्प किया जीवन का अधिक समय त्याग-तपस्या मैं बीतने लगा दीक्षा ग्रहण की भावना उत्कृष्ट हुई उन्होंने यह बात अपने परिवार वालों से की परिवार वालों ने दीक्षा की आज्ञा देने से मना ही कर दी सरदारांजी अपने परिवार वालों के विचारों से विचलित नहीं हुए।

कठिन परीक्षा :-

साध्वी बनना आज्ञा के बिना असंभव था परंतु आपने गृहस्थ वेश में ही साधु जीवन के नियमों की साधना प्रारंभ कर दी आपके जेठ ने दीक्षा की आज्ञा नहीं दी तब सरदारा जी ने प्रतिज्ञा की कि जब तक आप मुझे दीक्षा की आज्ञा नहीं देंगे तब तक मैं अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगी सरदारांजी को अपने घर से बाहर जाने की रोक

लगा दी सरदारांजी ने 6 दिन तक अन्न जल कुछ भी नहीं लिया जेठ ने कहा दासी से भिक्षा मंगवाकर काम चलाओ तुम्हारी प्रतिज्ञा भी भंग नहीं होगी और हमें दुख भी नहीं होगा कई दिनों तक यह क्रम चला एक दिन आप स्वयं भिक्षा के लिए बाहर चली गई बहादुर सिंह को मालूम होने पर उन्होंने सरदारांजी के बाहर जाने पर रोक लगा दी दूसरे दिन सरदारांजी भिक्षा के लिए बाहर जाने लगी तब आपके जेठ ने आप को कमरे में बंद करवा दिया सरदारांजी एक कमरे में बंद थी भावनाओं का बेग बढा आपने सफेद वस्त्र धारण किए और साध्वी का भेश पहन लिया हाथों से कैश लुंचन करने लगी एक दिन जेठानी ने कहा मैं तुम्हारी साधना देखकर विस्मित हूं मैंने तो आज भी तुम्हारे जेठ को इस विषय में समझाया पर वह कहते हैं की तपस्या करते करते मृत्यु हो जाएगी तो घर में बैठे आंसू बहा लूंगा पर दीक्षा की स्वीकृति नहीं दूंगा यह सुनते ही उन्होंने प्रतिज्ञा कि की जब तक आज्ञापत्र नहीं मिलेगा तब तक मैं जल ग्रहण नहीं करूंगी।

दीक्षा की स्वीकृति :-

गर्मी बढ़ने से खून निकलने लगा पर जेठ का मन नहीं पिघला यह देखकर जेठानी तथा 80 वर्षीय दादी सास भी सरदारा जी के पक्ष में हो गई दोनों ने संकल्प किया कि जब तक सरदारांजी अन्न जल ग्रहण नहीं करेगी हम भी अन्न जल ग्रहण नहीं करेंगे जेठ का कठोर ह्रदय दादी मां के स्नेह से द्रवित हो गया विवश होकर उन्हें स्वीकृति पत्र देना पड़ा चूरु पहुंचने पर पिता ने वह पत्र अपने पास रख लिया और सरदारांजी को देने में आना कानी की कई दिन बिता दिए सरदारांजी ने फिर चारों आहारों का त्याग कर दिया 5 दिन निकल गए घर वाले भी थक गए आखिर वह पत्र उन्हें सौंप दिया पत्र मिलने पर सरदारांजी युवाचार्य जीतमल जी के दर्शनार्थ उदयपुर रवाना हो गई युवाचार्य ने विक्रम संवत 1897 मिक्सर कृष्णा 4 को उदयपुर में 32 वर्ष की अवस्था में सरदारांजी को दीक्षा प्रदान की।

दीक्षा के बाद:-

दीक्षा के बाद जब प्रथम बार अपने तृतीय आचार्य श्री रायचंद जी के दर्शन किए तब आचार्य श्री ने आप को औपचारिक रुप से अग्रगण्या बना दिया दीक्षा के 13 वर्ष बाद आपको साध्वी प्रमुखा का पद मिला जयाचार्य को आपकी योग्यता पर पूर्ण विश्वास था प्रखर बुद्धि के कारण आप 1 दिन में 200 पदों को कंठस्थ कर लेती थी।

कुशल व्यवस्थापिका:-

आचार्यों का आपके काम के प्रति असंदिग्ध भाव था साध्वी समाज की एक और समस्या थी साध्वियो के संगठक सम संख्यात्मक नहीं थे किसी संगठन में एक साध्वी रहती तो किसी संगठन में केवल तीन ही। लाडनूं में 1 दिन श्रीमज्जयाचार्य

ने सरदारांजी से कहा साध्वियो की योग्यता अनुसार उनके संघाटक तैयार करो और उनकी संख्यात्मक विषमता मिटा दो आपने आदेश पा एक रात में 121 साध्वियों के 23 नए संघाटक तैयार कर जयाचार्य को निवेदित किया सरदारांजी के व्यक्तित्व के कारण ही सब कुछ आसानी से हो गया।

संविभाग की व्यवस्था:-

आहार के सम विभाग की परंपरा का श्रेय सरदारांजी को ही है उस समय साधु साध्वियों की समस्त भिक्षा आचार्य के समस्त एकत्र की जाती उनमें से साधु जितना चाहते हैं उतना रख लेते शेष साध्वियों को दे देते सरदारांजी को यह बात अखरी उन्होंने श्रीमज्जयाचार्य से उचित परिवर्तन की प्रार्थना की उनके अनुसार सम विभाग की व्यवस्था चालू हो गई आपने साध्वी जीवन में तपस्याएं की अनेक साध्वियो को तपस्या के लिए प्रोत्साहित किया अंत में विक्रम संवत 1927 की पौष कृष्णा अष्टमी को आजीवन अनशन में बीदासर में आप का स्वर्गवास हो गया।

पाठ क्रमांक 14 (आचार्य भिक्षु के प्रेरक प्रसंग)

1. आप इतने जनप्रिय क्यों इस घटना को संक्षेप में लिखो?

एक व्यक्ति ने आचार्य भिक्षु से उनके जनप्रिय होने का कारण पूछा तो आचार्य भिक्षु ने बताया कि "एक पतिव्रता स्त्री थी उसका पति विदेश में रहता था समाचार भी नहीं आया लेकिन अकस्मात् एक समाचार वाहक आया जिससे समाचार प्राप्त कर उसे प्रसन्नता हुई ।ठीक उसी तरह हम भगवान के संदेश वाहक हैं। लोग इतने आतुर रहते हैं भगवान के संदेश सुनने के लिए। हमारे प्रति जनता के आकर्षण का यही कारण है।

2. एकेंद्रिय जीवों से पंचेंद्रिय जीवों का पोषण करने में धर्म क्यों नहीं है?

आचार्य भिक्षु ने बताया कि स्वामी की इच्छा के बिना किसी वस्तु को जबरदस्ती किसीऔर को दी जाए तो उसमे धर्म नहीं है तो एकेंद्रीय ने कब कहा कि हमारे प्राण लूट कर दूसरों का पोषण करो ।वह बलात्कार है ,एकेंद्रिय के प्राणों की चोरी है ।इसलिए एकेंद्रिय जीवों को मारकर पंचेंद्रिय का पोषण करने में धर्म नहीं है।

3. मजने वाली घटना संक्षेप में लिखो?

जोधपुर राज्य के एक प्रदेश के कांठा का एक छोटा सा कस्बा है कंटालिया ।वहां किसी के घर गहने चोरी हो जाने के कारण बोर नदी के कुम्हार को बुलाया गया ।वह अंधा था। फिर भी लोग चोरी का भेद जानने के लिए उसे बुलाते थे। क्योंकि देवता उसमें बोलते थे ।वह आया और भीखणजी जी से पूछा किसी पर संदेह है ?भीखणजी उसकी चालाकी की अंत्येष्टि करना चाहते थे इसलिए उन्होंने कहा

संदेह मजने पर है । रात को कुम्हार अखाड़े में आया। लोग इकट्ठे हुए ।देवता को शरीर में बुलाया ।वह डाल दे डाल दे रे चिल्लाया और नाम प्रकट करने की आवाज आई। कुम्हार का देवता बोल उठा कि गहना मजने ने चुराया है ।तब एक फकीर उठा और डंडा घुमाते हुए बोला मजना मेरे बकरे का नाम है, उस पर झूठा आरोप लगाता है। लोग उसे कोसने लगे तब भीखणजी बोले जब चोरी आंख वालों के घर हुई है तो अंधे को बुलाने से गहने कैसे मिलेंगे?इस प्रकार भीखणजी ने कुम्हार की ठग विद्या की पोल खोल दी।

पाठ क्रमांक 15 (चार गतियां)

1. आत्मा के अमर होने पर भी उसका जन्म व मरण क्यों होता है?

जन्म मरण का मुख्य कारण है -आत्मा का कर्म सहित होना ।जब तक कर्म पुद्गलों से आत्मा का बंधन रहेगा तब तक आत्मा का अस्तित्व नहीं मिटता ।इसलिए आत्मा के अमर होने पर भी आत्मा का जन्म मरण होता रहता है।

2. तिर्यंच गति में कौन कौन से प्राणी होते हैं?

तिर्यंच गति में एक, दो ,तीन, चार व पांच इंद्रिय वाले जलचर ,स्थलचर और नभचर आदि सभी प्राणी होते हैं।

3. कौन से देवता कल्पोपन्न व कल्पातीत होते हैं और क्यों?

वैमानिक देवता दो तरह के हैं:-कल्पोपन्न और कलपातीत

कल्पोपन्न12 होते हैँ।इन12 देवलोक में जो देवता पैदा होते हैं वे कल्पोपन्न है क्योंकि इनमें स्वामी सेवक आदि का कल्प विभाग होता है।

कल्पातीत:-

नवग्रैवेयक और पांच अनुत्तर विमान में उत्पन्न होने वाले देव कल्पातीत होते हैं क्योंकि इनमें स्वामी सेवक आदि का कोई भी व्यवहार नहीं होता।ये अह्मिंद्र कहलाते हैँ।

4. गति का अर्थ समझाइए?

गति का शाब्दिक अर्थ है चलना। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना। परंतु यहां गति शब्द का अर्थ एक जन्म स्थिति से दूसरी जन्म स्थिति अथवा एक अवस्था से दूसरी अवस्था को पाना है।

5. नरक के कितने प्रकार हैं नाम उल्लेख करें?

नरक के 7 प्रकार हैं

1. रत्नप्रभा 2. शर्करा प्रभा 3. बालूका प्रभा 4. पंक प्रभा 5. धूम प्रभा 6. तमः प्रभा और 7. महा तमः प्रभा।

पाठ क्रमांक 16 (दो राशि)

1. पुद्गल हमारे लिए क्यों अपेक्षित है?

क्योंकि पुद्गल के बिना देहधारी प्राणी अपना निर्वाह नहीं कर सकते। श्वास - निःश्वास से लेकर खाने ,पीने ,पहनने आदि सब कार्यों में पौद्गलिक वस्तुएं ही काम में आती हैँ। शरीर स्वयं पौद्गलिक है ।मन ,वचन की प्रवृत्ति भी पुद्गलों की सहायता से होती है ।आत्माएं भी पुद्गल का उपयोग करती हैँ। इसलिए पुद्गल हमारे लिए अपेक्षित है।

2. धर्मास्तिकाय व अधर्मास्तिकाय में क्या भेद है?

धर्मास्तिकाय व अधर्मास्तिकाय में अंतर:-

• गति में सहायक होने वाले द्रव्य को धर्म कहते हैं ।जबकि जीव व पुद्गलों की स्थिति में सहायक द्रव्य को अधर्म कहते हैं ।

• धर्मास्तिकाय का षड्द्रव्य में प्रथम स्थान है।जबकि अधर्मास्तिकाय का षड् द्रव्य में दूसरा स्थान है ।

• गति का आलंबन तत्व निमित्त कारण है -धर्मास्तिकाय।जबकि स्थिर रहने का आलंबन तत्व निमित्त कारण है -अधर्मास्तिकाय।

• धर्मास्तिकाय संसार की सक्रियता का कारण है। जबकि अधर्मास्तिकाय संसार की निष्क्रियता का कारण है ।

3. 9 तत्वों में जीव और अजीव कौन-कौन से हैं नाम बताइए।

नौ तत्वों में जीव पांच हैं - जीव ,आश्रव, संवर, निर्जरा और मोक्ष ।

जबकि अजीव चार हैं:- अजीव, पुण्य ,पाप और बंध ।

पाठ क्रमांक 17 (जीव सब समान है)

1. क्या एक चींटी को और एक हाथी को मारना बराबर है ?

हां एक चींटी और हाथी को मारना बराबर है। दोनों की आत्मा समान है। क्योंकि सब जीवों की आत्मा के ज्ञानमय असंख्य प्रदेश बराबर होते हैं।

2. क्या छोटे प्राणी को मारकर बड़े प्राणी को बचाना धर्म है ?

नहीं छोटे प्राणी को मारकर बड़े प्राणी को बचाना धर्म नहीं है। ऐसा सिद्धांत अहिंसा के सनातन सिद्धांत के नितांत प्रतिकूल है ।

3. क्या अर्थ हिंसा में भी पाप है ? यदि है तो क्यों ?

हां अर्थ हिंसा में भी पाप है ।क्योंकि हिंसा में धर्म नहीं होता ।वह चाहे अपने लिए की जाए चाहे और किसी के लिए ।

4. अर्थ हिंसा और अनर्थ हिंसा में क्या भेद है ?

जो आवश्यकता से की जाए वह अर्थ हिंसा और जो बिना आवश्यकता की जाए वह अनर्थ हिंसा है। अर्थ हिंसा को गृहस्थ छोड़ नहीं सकता यह उसकी विवशता है बल्कि अनर्थ हिंसा को गृहस्थ छोड़ सकता है।

5. "जीवो जीवस्य जीवनम्" उक्ति का अर्थ बताइए।

जीव, जीव का जीवन है।

पाठ क्रमांक 18 (धर्म)

1. धर्म के कितने प्रकार हैं?

धर्म दो प्रकार का है ।संवर(त्याग) और निर्जरा (तपस्या)।

2. अहिंसा धर्म के विषय में जैनों का प्रवृत्त्यात्मक दृष्टिकोण क्या है ?

प्रत्येक संसारी आत्मा में दो प्रकार के आचरण पाए जाते हैं। निरोधात्मक और प्रवृत्यात्मक। प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है -धार्मिक एवं लौकिक। जिस प्रवृति से अहिंसा को ,राग द्वेष एवं मोहरहित आचरणों को पोषण मिले वह प्रवृत्ति धार्मिक है और उसके अतिरिक्त दूसरी जितनी सांसारिक प्रवृत्तियां है वे सब लौकिक है ।

3. गृहस्थ अपने जीवन में धर्म कैसे कर सकता है?

गृहस्थ अपने लौकिक कर्तव्यों का पालन करते हुए भी धर्म कर सकता है जैसे खाने-पीने में आसक्ति ,गृद्धि एवं लोलुपता न रखकर ।

वस्त्र पहनने में आडंबर व दिखावे की भावना न रखकर।

धनोपार्जन करने में असत्य, अन्याय आदि का आचरण न करके।

भौतिक सहायता देने में आसक्ति व अहंभाव न रखकर गृहस्थ अपने जीवन में धर्म कर सकता है।

4. संवर और त्याग में क्या अंतर है ?

त्याग और संवर स्थूल दृष्टि से तो एक ही है।लेकिन सूक्ष्म दृष्टि से कुछ अंतर होते हैं। त्याग तो संवर ही है।फिर भी त्याग एक क्रिया है संवर उसका परिणाम है। त्याग किया जाता है तब उसका परिणाम आता है संवर। आत्मा की आंतरिक प्रवृतियों का निरोध हो जाना भी संवर है ,जैसे क्रोध ,मान ,माया ,लोभ आदि को प्रत्याख्यान करके नहीं मिटाया जा सकता बल्कि आंतरिक शुद्धि से ही मिटाया जा सकता हैं।

5. संवर और निर्जरा में क्या अंतर है?

संवर आत्मा कि वह परिणति है जिस से आत्मा का निरोध होता है जब की तपस्या के द्वारा कर्म मल विच्छेद होने से जो आत्मा की उज्ज्वलता होती है वह निर्जरा है

संवर नए कर्मों को प्रवेश करने से रोकता है जबकि निर्जरा आत्मा के पुराने कर्मों को दूर करती है

आश्रव का प्रतिपक्षी है जबकि निर्जरा बंधन का प्रतिपक्षी है।

संवर का सशक्त उपाय है प्रत्याख्यान जबकि निर्जरा का सशक्त उपाय है तपस्या
संवर के साथ निर्जरा अवश्य होती है जबकि निर्जरा संवर के बिना भी होती है।
नो तत्वों में संवर छठा तत्व है जबकि निर्जरा सातवां तत्व है
संवर का हेतु निवृत्ति (निरोध) है जबकि निर्जरा का हेतु प्रवृत्ति है।

पाठ क्रमांक 19 (धर्म और लौकिक कर्त्तव्य)

1. धर्म शब्द के कितने अर्थ हैं?

धर्म शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में हुआ है जैसे गृहस्थ धर्म, योद्धाओं का धर्म, दीन दुखियों की सहायता करने में उदार व्यक्तियों का धर्म ,कष्ट निवारण परोपकारी पुरुषों का धर्म, उष्णता अग्नि का धर्म ,गांव का धर्म, नगर का धर्म ,राष्ट्र का धर्म तथा अहिंसा सत्य व तपस्या धर्म आदि अनेक अर्थों में धर्म शब्द का प्रयोग हुआ है।

2. धर्म लौकिक कर्तव्यों से भिन्न क्यों है?

धर्म लौकिक कर्तव्यों से भिन्न इसलिए है क्योंकि जिन जिन कामों को लोग कर्तव्य रूप से निर्धारित करते हैं वे लौकिक कर्तव्य हैं।जबकि धर्म की परिभाषा तो आत्मा साधना का पथ है मोक्ष का उपाय है।

3. लौकिक कर्तव्यों का लक्ष्य क्या है?

लौकिक कर्तव्य का लक्ष्य गृहस्थ धर्म ,रीति- रिवाज ,योद्धा का धर्म निभाना।अर्थात् सांसारिक कर्तव्य को पूर्ण करते हुए जीवन निर्वाह करना।

4. दीन दुखियों की सहायता करना कौन सा धर्म है?

दीन दुखियों की सहायता करना लौकिक धर्म है।

पाठ क्रमांक 20 (जैन धर्म)

1. जैन धर्म का शाब्दिक अर्थ क्या है?

जैन धर्म का शाब्दिक अर्थ है -जिन अर्थात् राग द्वेष रूपी शत्रुओं के विजेता ।वीतराग द्वारा प्ररूपित धर्म।

2. जैन धर्म के आधारभूत तत्व क्या है?

जैन धर्म के आधारभूत तत्व अनेकांत अहिंसा और अपरिग्रह है ।

3. .क्या जैन धर्म व्यक्ति पूजा को स्थान देता है ?

नहीं ।जैन धर्म व्यक्ति पूजा को स्थान नहीं देता बल्कि जैन धर्म में गुणों की पूजा होती है।

4. क्या जैन धर्म में जातिवाद को स्थान है ?

नहीं। जैन धर्म में जातिवाद को स्थान नहीं है जैन धर्म मानव मात्र के लिए है।

5. भारतीय संस्कृति की दो धाराएं कौन सी है?

(1) वैदिक संस्कृति (2) समण संस्कृति।

6. जैन धर्म कितने नाम से प्रचलित है?

जैन धर्म 3 नाम प्रचलित थे , अर्हत धर्म , निर्ग्रंथ धर्म , श्रमण धर्म

भगवान महावीर के निर्वाण के काफी समय बाद जैन शब्द का प्रचलन हुआ।

6. विज्ञान के क्षेत्र में सापेक्षवाद की व्याख्या किसने की?

डॉक्टर आइंस्टीन ने।

7. जैन धर्म के आधारभूत तत्वों का उल्लेख करो?

अनेकांत-

जैन दर्शन सत्य के साक्षात्कार का दर्शन है। इसलिए वह अनेकांत का दर्शन है इस दर्शन के पुरस्कर्ता भगवान महावीर थे इस सिद्धांत को जैन आचार्य ने बहुत आगे बढ़ाया अनंत दृष्टिकोण से तत्व को देखना परखना अनेकांत है और उसका प्रतिपादन करना स्यादवाद है।

अहिंसा:-

सब जीवो के प्रति संयम करना समभाव रखना आत्मौप्य बुद्धि को विकसित करना अहिंसा है महावीर ने अहिंसक क्रांति के लिए जनता के सामने कुछ अहिसंक सूत्र प्रस्तुत किए।

अपरिग्रह:-

अपरिग्रह का आधार है मूर्छा और ममत्व का भाव वस्तु परिग्रह नहीं है। परिग्रह है उसके प्रति होने वाली मूर्छा आसक्ति। अनावश्यक लोग की मनोवृति मूर्छा के कारण होती है महावीर के अनेक सिद्धांत ऐसे हैं जिनके उपयोगिता आज भी हमारे सामने हैं आज भी वे सिद्धांत सहायक और नए प्रतीत हो रहे हैं।

8. अनेकांत क्या है इस के पुरस्कर्ता कौन थे?

अनंत दृष्टिकोण से वस्तु को देखना परखना अनेकांत है इसके पुरस्कर्ता भगवान महावीर थे।

9. अनेकांत और स्यादवाद में क्या अंतर है?

एक ही वस्तु में विरोधी अविरोधी अनेक धर्मों का एक साथ स्वीकार करना अनेकांत है जबकि इन धर्मों की जो व्याख्या पद्धति है, प्रतिपादन की शैली है वह स्याद्वाद है।

अनेकांत सापेक्ष जीवन शैली है जबकि स्यादवाद प्रतिपादन की पद्धति है।

अनेकांत दर्शन है जबकि उसका व्यक्त रूप स्यादवाद है

अनेकांतवाद वाच्य है जबकि स्यादवाद वाचक है

अनेकांत यानी चिंतन की शक्ति जबकि स्यादवाद यानी भाषाई प्रतिपादन की शक्ति।

पाठ क्रमांक 21 (सृष्टि के विषय में जैन धर्म का दृष्टिकोण)

1. इस लोक का कोई कर्त्ता नहीं है ,इसे ठीक ठीक समझाओ?

इसके बारे में यह शंका उत्पन्न होती है कि सृष्टिकर्त्ता कब उत्पन्न हुआ?यदि वह सादि है तो क्याअपने आप उत्पन्न हो गया या किसी अन्य कारण से उत्पन्न हुआ ?यदि सृष्टिकर्त्ता अपने आप उत्पन्न हो सकता है,तब जगत् भी अपने आप उत्पन्न हो सकता है ।इस प्रकार न इस प्रश्न का अंत होगा और न ही जगत् कर्त्ता की उत्त्पत्ति का समय ही निकल सकेगा इसलिए इस लोक का कोई कर्त्ता नहीं है।

2. क्या जैन दर्शन अनीश्वरवादी है?

नहीं जैन दर्शन अनीश्वरवादी नहीं है।जो आत्माएं तपस्या एवं संयम के द्वारा कर्म मल का विशोधन कर आत्म स्वरुप को प्राप्त हो जाती है,उनको ईश्वर ,परमात्मा,सिद्ध,मुक्त कहते हैं।

3. जड़ कर्म चेतन आत्मा को फलोपभोग कैसे करवाते हैं?

कर्म पुद्गलों का आत्मा के साथ संबंध होने से उनमें से एक शक्ति पैदा होती है और जब वह परिपक्व हो जाती है तब जिस प्रकार पथ्याहार ,विष या मदिरा का असर होता है वैसे ही जीवों की बुद्धि भी कर्मानुसार हो जाती है और वे उनका अच्छा या बुरा फल भोग लेते हैं। क्लोरोफॉर्म आदि स्थूल पौद्गलिक वस्तुओं में भी आत्मा को मूर्छित करने की शक्ति रहती है तब अतिसूक्ष्म परमाणुओं में आत्मा के व्याकुल बनाने की क्षमता में कोई आश्चर्य वाली बात नहीं है।

4. मुक्त आत्माएं सिद्धालय में क्या करती है?

मुक्तआत्माएं सिद्धालय में आत्म स्वरूप का अनुभव करती है ।

5. अनादिकाल से लगे हुए कर्मों से आत्मा की मुक्ति किस प्रकार होती है?

आत्मा और कर्मों का संबंध प्रवाह रूप से अनादि है ,व्यक्ति रुप से नहीं ;अर्थात एक कर्म आत्मा के साथ निरंतर चिपका हुआ नहीं रहता अपितु निश्चित समय तक ही रह सकता है अतः आगामी कर्म द्वार का सर्वथा निरोध एवं पूर्व कर्मों का पूर्ण क्षय होने पर आत्मा मुक्त हो जाती है।

पाठ क्रमांक 22 (सम्यक्तव और मिथ्यात्त्व)

1. जैन धर्म में सम्यक्त्व का महत्व क्यों है?

जैन दर्शन में मोक्ष के चार साधन है उनमें प्रथम साधन है सम्यग्दर्शन सम्यग् दर्शन का अर्थ है- सत्य में विश्वास। जो वस्तुएं जैसी है उन पर वैसा ही विश्वास करना सम्यक्त्व है सत्य पर विश्वास है ।सम्यक्त्व धर्म का अविच्छिन्न अंग है इसलिए हमारा ध्यान धर्म क्षेत्र की ओर केंद्रित होता है धार्मिक जगत में देव गुरु और धर्म यह तीन तत्व जिनको रत्नत्रय कहते हैं मुख्य माने जाते हैं इन तीनों पर वही सफलता पाता है जो इन तीनों को सत्य की कसौटी पर कस कर दृढ़ निश्चय हो जाता है।

2. धर्म की परिभाषा बताएं?

“आत्म शुद्धि साधनं धर्मः" जो कार्य आत्मा की शुद्धि करने वाला है वह धर्म है अथवा अरिहंत भगवान ने जो उपदेश दिया है उस पर आचरण करना धर्म है। धर्म वह है जिससे मोक्ष की साधना की जा सके।

3. रत्नत्रय किसे कहते हैं ?

धार्मिक जगत् में देवगुरु और धर्म इन तीन तत्व को रत्नत्रय कहते हैं।

4. मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

साधु साधना का अग्रदूत है और साधना का अंतिम एवं सर्वोत्कृष्ट फल मोक्ष है इन सब पर यथार्थ श्रद्धा न रखने वाले व्यक्ति मिथ्यात्वी कहलाते हैं।

5. सही बात को उलटी जानना मिथ्यात्व है ? या नहीं?

हां सही बात को उलटी जानना मिथ्यात्व है।

6. निश्चयपूर्वक हम किसी को मिथ्यात्वी कह सकते हैं ? या नहीं?

नहीं। लेकिन लक्षणों से सम्यक्त्व व मिथ्यात्व का ज्ञान हो जाता है जिनमें जो लक्षण मिलते हैं उन्हें वैसा ही समझ लेना चाहिए।

7. क्या मिथ्यात्व की धार्मिक क्रियाएं धर्म नहीं है?

मिथ्यात्वी ब्रह्मचर्य को अच्छा मानता है ।
और ब्रह्मचर्य का पालन करता हैं तो ये उसकी धार्मिक क्रियाए हैं और अच्छी है
लेकिन मिथ्यात्वी की छः द्रव्य , नौ तत्त्व पर प्राप्त जानकारी सही नहीं होती देव, गुरु, धर्म पर श्रद्धा नही होती इसलिए उसको मिथ्यात्वी कहा गया है।

8. देव गुरु व धर्म की परिभाषा लिखें?

देव- देव राग द्वेष रहित वितराग अर्थात सर्वज्ञ होते हैं वे यथा व्यवस्थित तत्वों का उपदेश करते हैं।

गुरु :-सर्वज्ञ भाषित धर्म के उपदेशक एवं जीवन पर्यंत 5 महाव्रतो को पालने वाले साधु गुरु कहलाते हैं।

धर्म:- आत्मशुद्धि साधनम् धर्मः ।जो कार्य आत्मा की शुद्धि करने वाला है वह धर्म है।

पाठ क्रमांक 23 (जैन संस्कृति)

1. अन्य संस्कृतियों की उन दो प्रथाओ के नाम बताओ जिन्हें जैन लोग भी करते हैं?

भौतिक अभिसिद्धि के लिए देवी-देवताओं को पूछना।
मृतक क्रिया अर्थात् श्राद्ध करवाना।

2. जैन गृहस्थों की विशेषताओं का वर्णन शास्त्रों में किस प्रकार हुआ है?

जैन गृहस्थो की विशेषताओं का वर्णन करते हुए शास्त्रों में लिखा है निर्ग्रंथ प्रवचन पर श्रद्धा रखने वाले गृहस्थों को देवता भी धर्म से विचलित नहीं कर सकते और वह देवताओं की सहायता की अपेक्षा नहीं रखते।

3. जैन संस्कृति का आधार क्या है?

जैन संस्कृति का आधार संवर और निर्जरा है जिसका उद्देश्य आत्मा के मूल स्वरुप को प्रकट करना है इसी लक्ष्य के आधार पर जैन संस्कृति का निर्माण हुआ है यही जैन संस्कृति का आधार है।

4. जैन परम्परा में तप के बारे में क्या कहा गया है?

जैन संस्कृति व्रात्यों की संस्कृति है ।व्रात्य शब्द का मूल व्रत है ।उसका अर्थ है - संयम और संवर। व्रत का उपजीवी तत्त्व है- तप। जैन परंपरा तप को अहिंसा, समन्वय ,मैत्री और क्षमा के रूप में मान्य करती है । अहिंसा के पालन में बाधा ना आए उतना तप सब साधकों के लिए आवश्यक है । विशेष तप उन्हीं के लिए है जिनमें आत्मबल या दैहिक विराग तीव्रतम हो। जैन दर्शन आत्मा के मूल स्वरुप को प्रकट करने के उद्देश्य से चलता है। संवर-निर्जरा रूपी तप से आत्मा को प्राप्त कर

अंतिम ध्येय तक पहुंचा जा सकता है। जीवन के अंतिम क्षणों में संथारा कर अग्रिम भवों को सुधार सकते हैं।

पाठ क्रमांक 24 (तेरापंथ के पर्व)

1. मर्यादा महोत्सव की स्थापना कब व कहां हुई?

   वि.सं 1921 को बालोतरा मैं मर्यादा महोत्सव की स्थापना हुई।

2. मर्यादा महोत्सव से क्या लाभ है ?

   स्वामीजी द्वारा लिखित मर्यादाओं को जयाचार्य ने एक महोत्सव का रूप दिया

   मर्यादा महोत्सव के लाभ-

   - मर्यादाओं के यथोचित पालन से तेरापंथ की आंतरिक व्यवस्थाएं और भी अधिक मजबूत हुई।
   - इस अवसर पर सब साधु साध्वियों के आने से तेरापंथ धर्मसंघ का संगठित रूप देखने को मिलता है।
   - इस उत्सव पर साधु साध्वियों का गुरु के प्रति समर्पण भाव देखने को मिलता है ।
   - आचार्य श्री की सेवा में रहकर सभी साधु साध्वियों को ज्ञान ध्यान सदभावना एवम सद्विचारों की उन्नति करने का अवसर मिल जाता है ।
   - इस उत्सव पर स्वामी जी द्वारा लिखित मर्यादाओं को पुनरूच्चारित किया जाता है जिससे धर्म संघ की नींव गहरी होती है ।
   - इस दिन सभी साधु साध्वियों के चातुर्मास फरमाए जाते हैं ।उन्हें वे बिना ननूनच के सहर्ष स्वीकार करते हैं जिससे तेरापंथ धर्म संघ के साधु साध्वियों का अनुशासन का विलक्षण प्रभाव भी देखने को मिलता है।
   - विहार के समय वंदना आदि करने से आपस में प्रकट होने वाला विशुद्ध प्रेम भी देखने को मिलता है।

3. चरम महोत्सव कब मनाया जाता है ?

   वि.सं.1860,भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी को चरम महोत्सव मनाया जाता है।

4. वर्तमान में पट्टोत्सव किस तिथि को मनाया जाता है?

   वैशाख शुक्ला दशमी को पट्टोत्सव मनाया जाता है।

5. तेरापंथ स्थापना दिवस की तिथि कौनसी थी?

   वि.सं 1817,आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा ।

पाठ क्रमांक 25 (परमेष्ठी स्मरण विधि)

1. इष्ट-स्मरण करने से क्या लाभ है?

प्रत्येक धर्म में इष्ट स्मरण को अधिक महत्त्व दिया जाता है।जैन परम्परा में भी इष्ट स्मरण का मुख्य स्थान है।

- इष्ट स्मरण से आत्मा में पवित्रता आती है ।
- चैतन्य की जागृति के लिए उपासना जगत में इष्ट स्मरण का प्रचलन है ।
- इष्ट स्मरण में पवित्रता को प्रधानता दी है।

2. जप कैसे करना चाहिए?

जप के लिए स्थान पवित्र और एकांत होना चाहिए।क्योंकि एकांत और पवित्र स्थान में जप करते समय विचार शांत और मन पवित्र रहता है।यदि जप करने में तन्मयता नहीं होगी तो वो जप केवल रटनक्रिया बन कर रह जाता है।

3. माला रखने की विधि क्या है?

माला को दाहिने हाथ में हृदय के निकट लेकर स्थिर आसन में उत्तर या पूर्व की ओर मुख करके बैठा जाता है ।सामने अंगूठे और मध्यमा द्वारा माला के मनकों की गणना की जाती है ।काष्ठ माला की अपेक्षा कर माला को अधिक उत्तम माना गया है।करमाला का तात्पर्य हाथ के पैरवों पर गणना किए जाने वाली माला से है।

4. जप करते समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

जप करते समय ध्यान रखने योग्य बातें:-

जप के लिए स्थान पवित्र और एकांत होना चाहिए।

जहां बच्चे क्रीड़ा कर रहे हो ,प्राणियों का आवागमन हो ,भय उत्पन्न हो, मच्छर आदि जंतुओं की बहुलता हो ऐसा स्थान जप के लिए अनुपयुक्त है ।
जप के लिए काष्ठ माला या करमाला का प्रयोग करना चाहिए।चांदी या सोने की माला मन में अस्थिरता उत्पन्न कर सकती है ।करमाला सर्वश्रेष्ठ है ।
जप में मन को स्थिर करने के लिए सादगीपूर्ण वेशभूषा को ही उपयुक्त माना है।चमकीला रंग के वस्त्र ,सुंदर आभूषण आदि मन में चंचलता उत्पन्न करते हैं।
प्रातः काल के समय जप करना चाहिए क्योंकि उस समय विचार शांत और मन प्रसन्न रहता है।वैसे आचार्यों ने तीन संधि बेला को जप का सम्यक् समय माना है ।
जिस मंत्र का जप किया जाए उसी को अपने में साकार देखना चाहिए। क्योंकि तन्मय बने बिना मन्त्र का जप केवल रटन क्रिया बन जाता है।
मन्त्रों का उच्चारण शुद्ध एवं स्पष्ट होना चाहिए।

पाठ क्रमांक 26 (सामायिक उपासना विधि)

1. सामायिक का तात्पर्य क्या है? इसमें क्या होता है?

   सामायिक का तात्पर्य समता का लाभ है अर्थात् जिस अनुष्ठान से समता की प्राप्ति हो उसे सामायिक कहा गया है।सामायिक में समस्त प्राणियों के प्रति समभाव तथा एक मुहूर्त्त तक पापकारी प्रवृत्ति का परित्याग किया जाता है।

2. सामायिक कैसे करनी चाहिए?

   सामायिक के लिए स्वच्छ ,एकांत और शांत स्थान तथा बैठने की

   मुद्रा(सुखासन,पद्मासन तथा वज्रासन)में से कोई एक आसन का चयन ,पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठते हुए सामायिक पाठ का संकल्प करना चाहिए।सर्वप्रथम 25 श्वासोच्छ्वास का कायोत्सर्ग(ध्यान)करना चाहिए।नमस्कार महामंत्र का जप करने के बाद किसी आराध्य पुरुष का स्मरण करना चाहिए।तत्पश्चात् स्वाध्याय और ध्यान का आलंबन लेकर सामायिक के काल को अप्रमत्त रहकर व्यतीत करना चाहिए।

3. सामायिक के लाभ बताएं।

   सामायिक करना श्रावक का पुनीत कर्त्तव्य है। सामायिक के लाभ-

   - पापकारी प्रवृत्ति से विरति होती है।
   - सामायिक करने से आत्मा की समस्त विषमताएं मिट जाती है।
   - सामायिक करने से सहज शांति और आनंद की उपलब्धि होती है।
   - सामायिक के बिना मुक्ति संभव नहीं है।

पाठ क्रमांक 27 (बाहुबली का अहम्)

1. भगवान ऋषभ के कितने पुत्र थे ?

   भगवान ऋषभ के सौ पुत्र थे ।

2. बाहुबली को तपस्या करने पर भी कैवल्य क्यों नहीं प्राप्त हुआ ?

   बाहुबली को अपने अहंकार के कारण तपस्या करने पर भी कैवल्य प्राप्त नहीं हुआ।

3. 'वीरा म्हांरा गज थकी उतरो' इसका क्या तात्पर्य है ?

   मेरे भाई अभिमान रूपी हाथी से उतरो।

4. संक्षेप में बाहुबली की घटना प्रस्तुत करो ।

बाहुबली का अहं

भगवान ऋषभ के सौ पुत्र थे। उनमें भरत सबसे बड़ा था। भगवान ऋषभ ने अपने सौ पुत्रों को अलग अलग राज्य सौंपकर दीक्षा ले ली। भरत ने अपने 98 भाइयों से युद्ध कर उनका राज्य हड़पने के बारे में विचार किया। सभी भाई आपस में मिलकर भगवान ऋषभ के पास पहुंचे। भगवान से प्रतिबोध पाकर उन्होंने अपना राज्य भरत को सौंप दिया एवं भगवान के पास दीक्षा ग्रहण कर ली।

भरत को अपने 98 भाइयों को राज्य प्राप्त करने के बावजूद तृप्ति नही हुई। उसने विजयोन्माद में बाहुबली के राज्य में दूत भेजा। दूत की बात सुनकर बाहुबली का रोष उभर आया। और उसने दूत से कहा- क्या 98 राज्य बिना युद्ध के पाकर भी भरत तृप्त नही हुआ? यह कैसी मनोदशा है। मुझमें भी शक्ति है परंतु मैं उस बल का दुरुपयोग नही करना चाहता। पिता के बनाई हुई व्यवस्था को तोड़ते हुए उनके पुत्र को लज्जा आनी चाहिए। बाहुबली ने निर्णय लिया कि अब वह चुप नही बैठेगा। भरत अपनी विशाल सेना के साथ बहली की सीमा पर पहुंचा। बाहुबली अपनी छोटी परंतु शक्तिशाली सेना के साथ वहां पहुंचा। भरत की सेना को हर बार हार का सामना करना पड़ा। बहुत से निरपराध लोगो की युद्ध में हत्या होने की वजह से देवताओं की मध्यस्थता में दोनों भाई आपस में युद्ध के लिए तैयार हुए। दृष्टि युद्ध, वाग युद्ध, बाहु युद्ध, मुष्टि युद्ध एवं द्वंद्व युद्ध। इन पांचो प्रकार के युद्ध में भरत पराजित हुआ। छोटे भाई से हारने की वजह से भरत ने मर्यादा तोड़ बाहुबली पर चक्र का उपयोग किया। बाहुबली का भी बचाव में हाथ उठ गया। भरत अपने कृत्य पर लज्जित होकर सिर झुकाए खड़ा था।

यहां लाखो कंठो में से एक ही स्वर निकल रहा था - महान् पिता का पुत्र महान होता है। बड़े भाई की हत्या अत्यधिक अनुचित कार्य है। क्षमा करने वाला बहुत महान् होता है। परंतु उठे हुए हाथ खाली नहीं जाने चाहिए इसलिए बाहुबली ने अपने ही हाथों से अपना केश लुंचन कर लिया।

जब पिता के चरण में जाने को तैयार हुए तब उनके पैर छोटे भाइयो को वंदना करने के चिंतन से रुक गए। अहं अभी भी शेष था। वे एक वर्ष तक ध्यान मुद्रा में खड़े रहे पर अहं पर विजय न पा सके।

ये पैर क्यों रुक रहे है? सरिता का प्रवाह क्यों रुक रहा है? यह शब्द हृदय तक पहुंचे। सामने ब्राह्मी और सुंदरी को देख। उनके शब्द "वीरा म्हारा! गज थकी उतरो।" अभिमान रूपी हाथी से उतरो। बहनों की विनम्र भरी वाणी सुन आत्म प्रतिबोध हुआ।।

छोटे बड़े का मानदंड बदला। पैर उठे की बंधन टूटे। अहं टूटते ही केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। सत्य का साक्षात होने से पहले ही वे स्वयं शिव बन गए। और मोक्ष को प्राप्त कर लिया।

5. पांच युद्धों के नाम बताओ।

दृष्टि-युद्ध ,वाग्- युद्ध, बाहु -युद्ध, मुष्टि-युद्ध और द्वंद्वयुद्ध।

पाठ क्रमांक 28 (महावीर का मेघ कुमार को ज्ञान दान)

1. मेघकुमार का मन घर जाने का क्यों हुआ?

मेघ कुमार का मन घर जाने के लिए इसलिए हुआ क्योंकि दीक्षा लेने के बाद उनका शयन स्थान द्वार के बीच में था।रात में साधुओं का आवागमन होता रहा जिससे उन्हें एक क्षण भी नींद नहीं आयी।तब मन में सोचा-जब मैं गृहस्थ जीवन में था तब प्रत्येक मुनि मेरे साथ प्रेमपूर्वक ज्ञान चर्चा करते थे लेकिन आज इन सबके मन में मेरे प्रति सम्मान नहीं रहा।तब मेघकुमार ने घर जाने का सोचा।

2. मेघ पूर्वजन्म में क्या था और उसने दावानल से बचने का क्या उपाय किया था ?

मेघकुमार पूर्व जन्म में हाथी था और दावानल से बचने के लिए उसने एक योजन भूमि को वृक्ष लता और तृण से रहित कर समतल बनाया ।

3. मेघकुमार की घटना को संक्षेप में अपनी भाषा में बताओ।

मेघकुमार राजा श्रेणिक का पुत्र था। माता धारिणी ने शुभ स्वप्न द्वारा पुत्र को जन्म दिया। माता को ग़र्भकाल में अकाल मेघ की इच्छा हुई थी, अतः पुत्र का नाम मेघ रखा गया। मेघ का विवाह आठ सुंदर, सद्गुणी कन्याओ से हुआ।

एक दिन राजगृह में भगवान महावीर पधारे। उनका प्रवचन सुन मेघ के मन मे वैराग्य जागा। उसने जब माता पिता से दीक्षा की अनुमति मांगी तब माँ का ममत्व सहज उभर आया। दीक्षा की बात कही तब मेघ ने बताया कि मौत का कोई भरोसा नही। जैसे तैसे माता पिता को समझाकर दीक्षा की अनुमति प्राप्त की एवं भगवान महावीर के पास दीक्षित हो गए।

भगवान महावीर ने दीक्षा पश्चात बताया कि अब से सब कार्य यत्नापूर्वक करना। प्रथम दिन सुखपूर्वक बीता। रात का समय आया और उनका स्थान क्रमानुसार द्वार के बीच में था। साधुओं के गमनागमन की वजह से उन्हें पूरी रात नींद नहीं आयी। और उनके मन में ख्याल आया कि यह साधु उनकी दीक्षा के बाद बदल गए है। सब स्वार्थी हो गये है। उन्होंने घर जाने का निर्णय लिया।

सुबह होते ही भगवान के पास पुहंचे पर कुछ कह न पाए। तब भगवान ने उनके मन के विचारों को बताते हुए पूछा क्या यह सत्य है कि तुम घर जाना चाहते हो। मेघ ने जवाब दिया "यह सत्य है ।"

भगवान ने मेघ को पूर्वजन्म की बात याद करने को कही। उसे बताया कि किस तरह वह पहले जन्म में हाथी था और कीचड़ में फंसने के बाद एक युवा हाथी के वैर की वजह से उसकी मृत्यु हुई। और उसके बाद फिर से हाथी के रूप में जन्म लेकर वह 700 हाथियों का नेता बना। किस तरह उसने दावानल को दृष्टि में रखते हुए उसने जंगल के एक स्थान को समतल एवं वृक्ष रहित बनाया।

एक बार जंगल में आग लगने की वजह से सभी जानवर वहाँ पहुंचे। जब खुजली करने के लिए हाथी ने अपना पैर ऊपर उठाया तो वहाँ एक खरगोश आ बैठा। खरगोश की जान बचाने के लिए लगभग 3 दिन की भूख प्यास एवं भारी शरीर में अकड़न होने की वजह से तुम्हारी मृत्यु हो गयी। सम्यग दर्शन से अनभिज्ञ होने के बावजूद तुमने कष्ट सहन किया। जिसकी वजह से तुम्हे मनुष्य जन्म मिला।

अब तो तुम मुनि हो एवं धर्म से सम्पन्न हो फिर क्यों कष्टों से घबरा रहे हो। मेघ की सोई आत्मा जाग गयी। और उसने अपने दुश्चिन्तन की आलोचना कर मन को पुनः स्थिर किया।

पाठ क्रमांक 29 (गजसुकुमाल की सहनशीलता)

1. गजसुकुमाल कौन थे?

   भगवान श्री कृष्ण के चचेरे भाई एवं देवकी के पुत्र थे।

2. गजसुकुमाल के मस्तक पर अंगारे किसने रखे तथा क्यों रखे ?

   गजसुकुमाल के मस्तक पर अंगारे सोमिल ब्राह्मण ने पूर्व भव के वैर के कारण रखे।

3. गजसुकुमाल की सहनशीलता से तुम्हें क्या प्रेरणा मिलती है ?

   गजसुकुमाल की सहनशीलता कहानी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें प्रत्येक कार्य में क्षमा को प्रमुख स्थान देना चाहिए ।क्षमा गुण संपन्न व्यक्ति ही देश के लोगों को उन्नति का मार्ग दिखला सकते हैं ।नवजागरण का शंख फूंक सकते हैँऔर वास्तविक सुधार करने में समर्थ व सफल हो सकते हैं।क्षमा धर्म द्वारा ही व्यक्ति क्रोध पर विजय प्राप्त कर सकता है।

4. भगवान अरिष्टनेमि कौन थे ?

   भगवान अरिष्टनेमि जैन धर्म के 22 वें तीर्थंकर थे।

5. गजसुकुमाल की सहनशीलता कथा को अपने शब्दों में लिखो?

   भगवान अरिष्टनेमि के अयोध्या पधारने पर अन्यत्र श्री कृष्ण जो कि 6 भाई थे तीन संघटनों में विभक्त होकर द्वारिका मे घूमने लगे। तीनो ही भिक्षा के लिए बारी बारी देवकी के पास जाते हैं ।एक रुप होने से देवकी सोचने लगी ये साधु बार बार एक ही घर मे क्यों आ रहे हैं ?जब वे इस शंका का समाधान लेने भगवान के

पास पहुंची, तब भगवान ने बताया कि यह 6 भाई एक समान रूप वाले हैं तथा तुम्हारे ही पुत्र है ।देवकी को पहले बड़ी खुशी हुई पर मन ही मन विचार करने लगी नलकुबेर सदृश्य सात पुत्रों को जन्म दिया पर कभी उनकी बाल्यावस्था नहीं देख पाई अपने आप को जघन्य अपूज्य मानने लगी ।माता को दुखी देखकर श्रीकृष्ण ने उसका कारण पूछा। कारण जानकर श्री कृष्ण ने माता को आश्वासन देकर अपने मित्र देव को याद किया अपनी माता और अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए निवेदन की !देव ने कहा एक उत्तम जीव आपका भाई होगा छोटी अवस्था में ही वह भगवान अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ग्रहण करेगा ।श्रीकृष्ण ने सारी बात बताई और अपने स्थान पर चले गए। यथा समय स्वप्न सूचित देवकी के पुत्र हुआ हाथी के तालू के जैसा कोमल होने के कारण बालक का नाम गजसु कुमाल रखा गया उस वक्त अरिष्टनेमि द्वारिका पधारे श्री कृष्ण और गज सुकुमाल हाथी पर वंदना करने जा रहे थे ।रास्ते में सोमिल ब्राह्मण की पुत्री सोमा का रूप लावण्य से विस्मित होकर श्रीकृष्ण ने गजसुकुमाल का रिश्ता सोमा के साथ तय किया । इधर अरिष्टनेमि का प्रवचन सुनकर गजसुकुमाल प्रतिबोध को प्राप्त हुए और उनका वैराग्य जागृत हुआ। घर आकर माता पिता तथा श्री कृष्ण से दीक्षा की अनुमति मांगने लगे परंतु उन्हें आज्ञा नहीं मिली। उनको रोकने के लिए उनको एक दिन का राज्य भी दिया गया परंतु अंत में सबको आज्ञा देनी ही पड़ी। गजसुकुमाल भगवान नेमि के पास दीक्षित हुए। दीक्षा लेते ही उन्होंने भगवान से प्रार्थना की ऐसा मार्ग दिखाये जिससे काम शीघ्रता से सिद्ध हो जाए। भगवान से कुछ छिपा नहीं था इसलिए उन्होंने भिक्षु की 12वीं प्रतिमा का रास्ता बताया । मुनि गजसुकुमाल भगवान को वंदना कर शमशान में जाकर खड़े खड़े ध्यान करने लगे । सोमिल ब्राह्मण हवन की सामग्री लेकर वहां से गुजर रहा था। उसने गजसुकमाल को देखा तो पूर्व भव का वेर जागृत हुआ ।विकृत होकर अपनी पुत्री के साथ हुए विश्वासघात के बारे में पूछने लगा। गजसुकुमाल से जवाब न पाकर वह तिलमिला उठा। उसने मुनिवर गजसुकुमाल के सिर पर गीली मिट्टी की पाल बनाकर उसमें जलते अंगारे रख दिए। सिर खिचड़ी की तरह सीजने लगा परंतु हृदय में क्षमा का शीतल सागर लहरा रहा था। वह अपनी आत्मा को प्रतिबोध देने लगे की हिंसा का प्रतिकार हिंसा से नहीं हो सकता और वही सोचने लगे कि अधर्म क्रोध के साथ जीने से अच्छा तो क्षमा धर्म को पालते हुए मरना है ।उनकी आत्मा विशुद्ध हो गई पापकर्म पूर्ण रूप से क्षय हो गए एवं मुक्ति प्राप्त हुई। मुनि गजसुकमाल की कहानी क्षमा की कहानी है ।आज के बालको मैं अगर क्षमा का गुण पल्लवित हो जाए तो देश में उन्नति एवं वास्तविक सुधार हम देख सकते हैं।